“अद्भुत और अनोखे थे ब्रह्मा बाबा”

ब्रह्मा बाबा की छवी निराली, पल-पल जीवन को प्रेरणा, उमंग और उत्साह देने वाली |
बालय अवस्था से ही थे मूल्य और गुणों के भण्डार, सबके प्रति सम्मान, स्नेह और सहयोग था उनके जीवन का आधार ||

लगन, परिश्रम और निष्ठां से, छोटी आयु में ही हीरो का व्यापार जमाया |
सच्चाई, प्रेम और धैर्यता से चलकर, जीवन में सबका प्यार पाया ||

सरल जीवन और उंच विचारो से, दिया उदाहरण आदर्श गृहस्थ जीवन का |
१२ (12) गुरु करने के बाद मिला सौभाग्य परमातम मिलन के अद्भुत आनंद और सुख का ||

हु ए दिव्य साक्षात्कार और आलौकिक अनुभव, नए स्वर्णिम युग के |
शिव ने अपना भागयशाली रथ बनाकर कहा, तुम ही तो हो श्री कृष्ण सतयुग के ||

चढ़ा नारायणी नशा बाबा को, झट से समेट लिया हीरो का कारोबार |
तन, मन, धन सब अर्पण कर ईश्वरीय सेवा में, प्रभु संग लग गए बनाने स्वर्णिम संसार ||

करके स्थापना ओम मण्डली की, ईश्वरीय महायज्ञ आरम्भ कराया |
होने लगे दिव्ये साक्षात्कार सबको, नित-प्रतिदिन देवी परिवार वृद्धि को पाया ||

ज्ञान कलश दे माताओ को, नारी के आत्म-सम्मान और गौरव को बढ़ाया |
१४ (14) वर्षो की गहन तपस्या से, कोमल कन्याओ को शिव-शक्ति बनाया ||

मिलें शिव सन्देश जन-जन को, आबू पर्वत पर बाबा यज्ञ वत्सो संग आया |
बहने लगी ज्ञान - गंगाये भारत में, जब शिव-शक्तियों ने सेवा का बीड़ा उठाया ||

लगी लगन बाबा को सम्पूर्ण फरिश्ता बनने की, नष्टोमोहा बन कर्मातीत अवस्था को पाया |
अंतिम विदाई लेते भी बच्चो को निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी का पाठ पढ़ाया ||

अव्यक्त होकर भी बच्चो को दादी के तन द्वारा शिव बाबा से रूहानी मिलन कराया |
ऐसे अद्भुत और अनोखे थे ब्रह्मा बाबा, जिन्होंने हमें अपनाकर शिव बाबा से मिलाया ||